मेरी एक बाप के सिवाय किसी कर्म सम्बन्ध में तो दिल नही लगी
चेक करनी अपनी अवस्था,किसी नाम-रूप में दिल तो नही लगी
कोई डिस-सर्विस तो नही की, योग और चलन का पोतामेल रखो
बुद्धि से अच्छे कर्म करो, कोई को दुःख देना नही
ईविल बाते न सुननी न सुनानी,पिता की निंदा नही करानी
निराकारी रूप की स्मृति सदा न्यारा और प्यारा बनाती
हम अवतार है,सेवा अर्थ अवतरित हुए
...समझना
गृहस्थी समझाना माना बोझ,गाड़ी कीचड़ में फंसी रहती
अवतार समझना माना उपराम होना
निजधाम और निजस्वरूप याद रहेगा
ब्राह्मण वो जो शुद्धि और विधि पूर्वक हर कार्य करें

ॐ शांति
मेरा बाबा